CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डि० २२९

6.1.2

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"

# वेदोंका अध्ययन

१५७३

स्वाध्याय-मण्डल,
औंध ( जि. सातारा )

सिद्धान्ताचार्य पं. फूलचंद जी शास्त्री,
निदेशक श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान.
वाराणसी. ब्यूरा अंक १५६

[ भा० मु० औंध ]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# वेदोंका अध्ययन

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।' संपूर्ण वेद धर्मका मूल है। वेदसेही मानवोंके सत्य धर्मका प्रवाह शुरू हुआ है। 'धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।' धर्म जाननेवालोंके लिये श्रुतिही परम प्रमाण है। इस तरह वेदका महत्त्व वर्णन किया जाता है। पर ये केवल शब्द मात्रही हैं, क्योंकि आज ऐसे ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं, जिनके पाठसे मनुष्य जान सकेंगे कि सब धर्म-प्रवाह वेदसेही शुरू हुए हैं। इतनाही नहीं, परंतु वेदका सरल अर्थ जाननेके लिये भी प्रामाणिक ग्रंथ अभीतक नहीं हुए हैं। ऐसी अवस्थामें जिज्ञासु लोग वेदका ज्ञान किस तरह प्राप्त करें, यह एक कठिन समस्याही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धान्ताचार्य पं. फूलचंद जी शास्त्री,
निदेशक श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान.



## वेदकी परीक्षाएँ और उपाधियाँ

वाराणसी द्वारा भेंट

| वर्ष | परीक्षा | पाठमंत्र-संख्या | तैयारीके निबंध | प्रश्नपत्र संख्या | उपाधि |
|---|---|---|---|---|---|
| १ प्रथम | वेद-परिचय | ३०० | १ | १ | वेद-परिचित |
| २ द्वितीय | वेद-प्रवेश | ५०० | २ | २ | वेद-प्रविष्ट |
| ३ तृतीय | वेद-प्राज्ञ | १००० | २ | ३ | वेद-प्राज्ञ |
| ४ चतुर्थ | वेद-विशारद | २००० | ३ | ३ | वेद-विशारद |
| ५ पंचम | वेद-पारंगत | ५००० | ३ | ४ | वेद-पारंगत |
| ६ षष्ठ | वेदाचार्य | ( स्वतंत्र खोजपूर्ण निबंध ) | | | वेदाचार्य |

इस वेद-परीक्षाकी पाठविधिके पुस्तक तैयार होकर छप रहे हैं। प्रथम तथा द्वितीय परीक्षाके पुस्तक तैयार होगये हैं।

9463

१. वेदपरिचय. तीनों भाग ( ३०० मंत्रोंका अर्थ टिप्पणी समेत ) मूल्य ४॥) डा. व्य. १)

२. वेदप्रवेश (५०० मंत्रोंका अर्थ टिप्पणी समेत ) मूल्य ५) डा. व्य. १।)

आगेके ग्रंथ छप रहे हैं। जैसे जैसे छपकर तैयार होंगे, वैसी विज्ञापन-द्वारा सूचना दी जायगी।

## मूल वेद-ग्रंथ तैयार हैं

वेदोंके मूल ग्रंथ, जिनमें भाष्य या अर्थ नहीं है, केवल मूलमात्र मंत्र हैं, ऐसे ग्रंथ तैयार हैं—

| | मूल्य | डा. व्य. | |
|---|---|---|---|
| १ ऋग्वेद संहिता | ६) | १॥) | |
| २ यजुर्वेद वाजसनेयी संहिता | ३) | ॥।) | (छप रही है) |
| ३ सामवेद संहिता | ३) | ॥।) | ( ,, ,, ) |
| ४ अथर्ववेद संहिता | ६) | १) | ( ,, ,, ) |
| ५ यजुर्वेद तैत्तिरीय संहिता | ६) | १) | |
| ६ ,, काठक संहिता | ६) | १) | |
| ७ यजु० मैत्रायणी संहिता | ६) | १) | |
| ८ ,, कापव संहिता | ४) | ॥।) | |

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



९ यजुर्वेद कपिष्ठल कठसंहिता ६) १) (छप. रही है)
१० अथर्ववेद पिप्पलाद संहिता ६) १) ( ,, ,, )

वेदाध्ययन करनेवालोंकी सुविधाके लिये सब संहिताओंमेंसे एक एक देवताके मंत्र छांट कर दैवत-संहिता तीन भागोंमें छापी है। इन भागोंमें वेदके सभी पादबद्ध मंत्र आ गये हैं। एक एक देवताके मंत्रोंका अध्ययन करनेवालोंके लिये ये मंत्र-संग्रह अत्यंतही उपयोगी हैं। इससे थोडे समयमें बहुतही अध्ययन हो सकता है—

## दैवत-संहिता

१ दैवत-संहिता, प्रथम भाग मूल्य ६ ) डा. व्य. १॥)
२ ,, ,, द्वितीय ,, ,, ६ ) ,, १॥)
३ ,, ,, तृतीय ,, ,, ६ ) ,, १॥) छप रहा है।

इनमें निम्नलिखित देवताओंके मंत्र छपे हैं। इनका ब्यौरा यह है—

### (१) दैवत-संहिता ( प्रथम भाग )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ अग्नि देवता | मंत्रसंख्या | २४८३ | मूल्य | ३) |
| २ इन्द्र ,, | ,, | ३३६३ | ,, | ३) |
| ३ सोम ,, | ,, | १२६१ | ,, | २) |
| ४ मरुद् ,, | ,, | ४६४ | ,, | १) |

कुल मंत्र-संख्या ७५७१

### (२) दैवत-संहिता ( द्वितीय भाग )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ५ अश्विनौ देवता | मंत्रसंख्या | ६८९ | मूल्य | ३ ) |
| ६ आयुर्वेद | ,, | २३४५ | ,, | ५ ) |
| ७ रुद्रदेवता | ,, | २२७ | ,, | २ ) |
| ८ उषा ,, | ,, | १९४ | ,, | २ ) |
| ९ अदितिः, आदित्याश्च | ,, | ११३७ | ,, | ४ ) |
| १० विश्वे देवाः | ,, | २३२० | ,, | ५ ) |

कुल मंत्र-संख्या ६९१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# (३) दैवत-संहिता ( तृतीय भाग )

| देवता | मंत्रसंख्या | देवता | मंत्रसंख्या |
|---|---|---|---|
| ११ वायुः | १२३ | ३६ आशीः [ प्रायाः ] | १३ |
| १२ वरुणः | १५९ | ३७ होत्राशिषः | ६ |
| १३ वास्तोष्पतिः | ८७ | ३८ पथ्या स्वस्तिः | ८ |
| १४ वेनः | ९ | ३९ अभिशापः | ४ |
| १५ विश्वकर्मा | ३४ | ४० दम्पती | ८ |
| १६ सदसस्पतिः | ४ | ४१ दम्पत्याशिषः | ९ |
| १७ अहिः,अहिर्बुध्न्यः | ४ | ४२ वधूवासःसंस्पर्शनिन्दा | २ |
| १८ बृहस्पतिः | ९६ | ४३ कामः | ५२ |
| १९ ब्रह्मणस्पतिः | ६१ | ४४ रतिः | ६ |
| २० पुरुषः | १७३ | ४५ रेतः | ४ |
| २१ आत्मा | १९४ | ४६ निर्ऋतिः | १० |
| २२ ब्रह्म | ८३ | ४७ पृथिवी | ८१ |
| २३ अध्यात्मम् | ४२३ | ४८ द्यावापृथिवी | ६७ |
| २४ कः [ प्रजापतिः] | ५५ | ४९ ऋभवः | ९८ |
| २५ जीवः | ७ | ५० क्षेत्रपतिः | ४ |
| २६ वाक् | २५ | ५१ पणयः | ६ |
| २७ श्रद्धा | ६ | ५२ मायाभेदः | ३ |
| २८ ज्ञानम् | १२ | ५३ ब्रह्मजाया | १८ |
| २९ संज्ञानम् | १८ | ५४ गौः | ३३३ |
| ३० मनः | १२ | ५५ अश्वः | ८२ |
| ३१ मन आवर्तनम् | १२ | ५६ हरिः | १४ |
| ३२ असुनीतिः | ६ | ५७ दधिक्रा | २५ |
| ३३ हस्तः | २ | ५८ सरमा | ५ |
| ३४ मन्युः | २० | ५९ शुनः, शुनासीरौ | ४ |
| ३५ भाववृत्तम् | २२ | ६० श्वानौ | २ |

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



| देवता | मंत्रसंख्या | देवता | मंत्रसंख्या |
|---|---|---|---|
| ६१ तार्क्ष्यः | ३ | ८६ स्वनयस्य दानस्तुतिः | ७ |
| ६२ श्येनः | ११ | ८७ सोमकः साहदेव्यः | २ |
| ६३ शकुन्तः (कपिञ्जलरूपी इन्द्रः) | ६ | ८८ पुरुमीळहौ वैददश्विः (तरन्तो वैददश्विः) | २ |
| ६४ अक्षाः | ७ | ८९ तरन्तमाहिषी शशीयसी | ४ |
| ६५ अक्षः कितव-निन्दा | ९ | ९० रथवीतिर्दार्भ्यः | ३ |
| ६६ कृषिः | १ | ९१ सुदासः पैजवनः | ४ |
| ६७ व्रश्चनः | १ | ९२ राजा | २१ |
| ६८ अरण्यानी | ६ | ९३ बृबुस्तक्षा | ३ |
| ६९ सीता | ७ | ९४ सार्ञ्जयः प्रस्तोकः (दानस्तुतिः) | ४ |
| ७० रथाङ्गानि | ४ | ९५ आसङ्गः | ५ |
| ७१ रथः | ५ | ९६ विभिन्दुः | २ |
| ७२ दुन्दुभिः | २६ | ९७ पाकस्थामा कौरयाणः | ४ |
| ७३ दुघणः इन्द्रो वा | १२ | ९८ कुरुङ्गः | ३ |
| ७४ संग्रामशिषः | २२ | ९९ कशुश्चैद्यः | ३ |
| ७५ अत्रिः | ४ | १०० तिरिन्दिरः पार्शव्यः | ३ |
| ७६ विश्वामित्रः | ३ | १०१ त्रसदस्युः पौरुकुत्सः | २ |
| ७७ वामदेवः | २ | १०२ चित्रः | २ |
| ७८ वसिष्ठ-पुत्राः, इन्द्रो वा | ९ | १०३ वरुः सौपाग्निः | ३ |
| ७९ वसिष्ठः | ५ | १०४ पृथुश्रवाः कानीतः | ४ |
| ८० वसिष्ठाशीः | १ | १०५ श्रुतर्वा आर्क्षः | ३ |
| ८१ रोमशा | १ | १०६ ऐन्द्रो वसुक्रः | ५ |
| ८२ अङ्गिरः पित्रथर्वभृगुसोमाः | १ | १०७ देव्यःइन्द्राणीवरुणान्यग्नाय्यः | २ |
| ८३ उपाध्यायः | १ | १०८ कुरुश्रवणस्रासदस्यवः | २ |
| ८४ भावयव्यः | ६ | १०९ उपमश्रवा मैत्रातिथिः | ४ |
| ८५ प्रजापतिः हरिश्चन्द्रः चर्म सोमो वा | १ | ११० असमातिः | ५ |

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



| देवता | मंत्रसंख्या | देवता | मंत्रसंख्या |
|---|---|---|---|
| १११ सावर्णेर्दानम् | ४ | १२६ अतिथि-सत्कारः | |
| ११२ ऋक्षाश्वमेधौ | ६ | ( ब्रह्मा, अतिथिः, विद्या. ) | ७३ |
| ११३ पुरूरवा | ९ | १२७ विद्युत् | ४ |
| ११४ उर्वशी | ९ | १२८ कामिनीमनोऽभिमुखी- | |
| ११५ दक्षिणा, दक्षिणा दातारो वा | ११ | करणम् | २ |
| ११६ शत्रुसेना-मोहनम् | २ | १२९ रयिसंवर्धनम् | २ |
| ११७ शत्रुनाशनम् | १७० | १३० शितिपाद् अविः | ६ |
| ११८ श्रेयःप्राप्तिः | ५ | १३१ विश्वजित् | ४ |
| ११९ बल-प्राप्तिः | ३ | १३२ तारके | १ |
| १२० वर्चःप्राप्तिः | ३ | १३३ मेखलाबन्धनम् | ५ |
| १२१ ऊर्जःप्राप्तिः | ३ | १३४ राष्ट्रसभा | ३ |
| १२२ अनुमतिः | ६ | १३५ विवाह-प्रकरणम् | १३९ |
| १२३ केवलः पतिः | ५ | १३६ खिल-सूक्तानि | २९१ |
| १२४ मधुविद्या | २४ | १३७ कुन्तापसूक्तानि | १४७ |
| १२५ अध्यापकविघ्नशमनम् | २ | १३८ माहनमन्त्यार्चिक, | १० |
| | | कुल मंत्र-संख्या | ३७५८ |

इसके अतिरिक्त सब याजुष संहिताके प्रकरण भी इस विभागमें हैं। (यह ग्रंथ छप रहा है।) इन तीनों संहिताओंमें सब वैदिक मंत्र आगये हैं। इन दैवत-मंत्र-संग्रहों के अर्थ भी छप रहे हैं—

## (१) मरुद्देवताका मंत्र-संग्रह

अन्वय, अर्थ, टिप्पणी, भावार्थ और विवरणके तथा अनेक सूचियोंके साथ। मू. ५) डा. व्य. १) यही ग्रंथ वेद-प्रवेश-परीक्षाके नियत किया है।

## (२) अश्विनौ देवताका मंत्र-संग्रह

(छप रहा है।) अन्वयादि पूर्व मरुद्देवताके अनुसारही है। अन्य देवताओं-के मंत्रोंके अर्थ तयार हो रहे हैं। तैयार होनेपर छप जायँगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# आर्षेय-संहिता

ऋषिक्रमानुसार मंत्रसंग्रहका नाम 'आर्षेय संहिता' है। ऋषि-क्रमानुसार भी अर्थ जानना आवश्यक है। दैवतक्रम और ऋषिक्रम ऐसे दो क्रम मंत्रोंके हैं और वेदका यथार्थ अर्थ जाननेके लिये इन दोनों क्रमोंसे वेदमंत्रोंका अर्थ जानना चाहिये। इसलिये हमने जैसी 'दैवत-संहिता' मुद्रित की है, वैसीही 'आर्षेय संहिता' भी मुद्रण करनेका उपक्रम किया है। ऋग्वेद-संहिताका नवम मण्डल और सामवेद-संहिता ये दैवत-संहिताके नमूने हैं। शेष ऋग्वेद-संहिता आर्षेय-संहिता, थोडेसे हेरफेरसे है।

हमने आर्षेय-संहिताके निम्नलिखित भाग इस समयतक अर्थके साथ प्रकाशित किये हैं–

| | ऋषिनाम | गोत्रनाम | मंत्रसंख्या | देवता-संख्या | मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | मधुच्छन्दा | वैश्वामित्रः | १२० | १० | १) |
| २ | मेधातिथिः | काण्वः | | | |
| | मेध्यातिथिः | ,, | ३२० | ४३ | २) |
| ३ | शुनःशेपः | आजीगर्तिः | | | |
| | (देवरातः) | (वैश्वामित्रः) | ११३ | १२ | १) |
| ४ | हिरण्यस्तूपः | आंगिरसः | ९६ | ५ | १) |
| ५ | कण्वः | घौरः | १२५ | ९ | |
| | प्रस्कण्वः | काण्वः | १०८ | ६ | २) |
| ६ | सव्यः | आङ्गिरसः | ७२ | १ | १) |
| ७ | नोधा | गौतमः | ८५ | ४ | १) |
| ८ | पराशरः | शाक्त्यः | १०५ | २ | १) |
| ९ | गोतमः | राहूगणः | (छप रहा है) | | |
| १० | कुत्सः | आंगिरसः | ,, | | |

अन्य ऋषियोंके भाष्य बने हैं और वे भी यथाक्रम छप जांयगे और इस तरह संपूर्ण "आर्षेय-संहिता" छपकर तैयार होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## परीक्षाके नियम

१. वेदकी परीक्षाएँ चैत्र, श्रावण तथा मार्गशीर्षमें होती हैं । परंतु परीक्षार्थीकी सुविधाके अनुसार अन्य समयमें भी ली जा सकती हैं ।

२. परीक्षार्थीको आवश्यक है कि वह प्रथम 'प्रार्थना-पत्र' हस्ताक्षर करके अपने संपूर्ण पतेके साथ "मंत्री स्वाध्याय-मंडल, औंध, जि. सातारा" के पास भेज देवे, साथ साथ अपने नगरके प्रतिष्ठित भद्र पुरुषका निरीक्षक होनेके लिये अनुमति-दर्शक हस्ताक्षर भी भेज देवे । निरीक्षणकर्ता शिक्षा-विभागमें कार्य करनेवाला अनुभवी सज्जन हो । स्वाध्याय-मण्डलसे स्वीकृति और परीक्षाके लिये तिथि निश्चित होकर आ जायगी, तब परीक्षा होगी ।

३. प्रत्येक परीक्षाके प्रत्येक प्रश्नपत्रके लिये ३) रु. [तीन] परीक्षक-दक्षिणा प्रथम आनी चाहिये, तब प्रश्नपत्र और उत्तर लिखनेके लिये आवश्यक कागज समयपर भेजे जायंगे । यहांसे आये कागजोंपरही उत्तर लिखने होंगे ।

४. परीक्षाके नियम तथा निरीक्षणकर्ताके लिये आवश्यक सूचनाएं समयपर भेजी जायगीं ।

५. परीक्षार्थी स्वा० मं० द्वारा निर्धारित पाठ्य पुस्तकोंकी सहायतासे अध्ययन करे अथवा ( पृ. ३ पर ) निर्धारित संख्यामें अन्य मंत्रोंका अध्ययन करे । स्वयं मंत्रोंका निश्चय करनेके लिये निम्नलिखित नियम हैं—

( अ ) सूक्त संपूर्ण अर्थात् अखंड होने चाहिये, सूक्त ९ मंत्रोंसे अधिक मंत्र-संख्यावाले होने चाहिये ।

( आ ) एक ऋषिकेही करीब १०० मंत्रोंसे अधिक मंत्र न हों और एक देवता-के भी करीब २०० मंत्रोंसे अधिक न हों । छन्द भी अनेक प्रकार-के हों । ऋषि, देवता और छन्दोंकी विविधता हो । अखण्ड सूक्तोंके हिसाबसे यह संख्या जैसी बने वैसी न्यूनाधिक बनायी जाय ।

( इ ) ऋग्वेद और अथर्ववेदके मंत्र बहुसंख्य हों और अन्य वेदोंके अल्प-संख्य हों । गद्य मंत्र प्रतिशतक ५ से अधिक न हों ।

( ई ) मंत्र स्वयं पसंद करने हों, तो प्रथम स्वाध्याय मंडल की अनुमति लेनी आवश्यक होगी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



६. परीक्षार्थी मंत्रोंके अर्थका अध्ययन स्वाध्याय मंडल की पद्धतिसे करे, अथवा अन्यान्य भाष्यकारोंकी पद्धतिसे करे, अथवा अनेक भाष्योंका अध्ययन करके अपनेही अर्थ करे। मंत्रोंका शब्दार्थ सरल और सुबोध और खींचातानीके विना होना चाहिये यही मुख्य बात है।

७. परीक्षार्थी स्वाध्याय मंडल द्वारा प्रकाशित पुस्तकोंसे अध्ययन करेंगे, तो उनको बडी सहायता मिल सकती है, क्योंकि ये अर्थ अत्यंत सरल हैं। पर विद्यार्थीके लिये इस विषयमें पूर्ण स्वतंत्रता रखी है। क्योंकि परतंत्र होकर वेदका अध्ययन नहीं होगा और परवशतामें किये अध्ययनसे मननशक्ति भी नहीं बढेगी।

सूचना– वेदमंत्रोंका अर्थ, भावार्थ, संकेतार्थ, व्यंग्यार्थ, लक्ष्यार्थ, ध्वन्यर्थ-अर्थापत्त्यर्थ, श्लेषार्थ आदि जानना यह बडे मननके पश्चात् होना संभव है, वह आज हो नहीं सकता। ये परीक्षाएँ केवल सरलार्थके लियेही हैं और यह सरल अर्थ भी भविष्यमें सिद्ध होनेवाला है। इसीलिये इस समय विद्यार्थी के लिये पूर्ण स्वतंत्रता रखी है।

प्रत्येक परीक्षामें इतनी मंत्र-संख्याका अध्ययन होना चाहिये यह पृ. ३ पर लिखा है और परीक्षाके पूर्व इतने निबंध लिखने चाहिये, यह भी वहीं लिखा है। प्रत्येक निबंधका कलेवर १०००० अक्षरोंसे कम नहीं होना चाहिये। निबंधोंके संबंधके नियम ये हैं—

## निबंधके विषयमें नियम

परीक्षार्थीको परीक्षाके पूर्व निबंध भेजना अत्यावश्यक है। इन निबंधोंके विषयके नियम ये हैं—

(१) प्रथम परीक्षा 'वेद-परिचय' है। इस परीक्षाकी तैयारीकी जाँच होनेके लिये परीक्षार्थीको एक निबंध अपनी तैयारी होनेके बाद भेजना चाहिये। इसी तरह द्वितीय (वेदप्रवेश) और तृतीय (वेद-प्राज्ञ) परीक्षाके लिये प्रत्येक परीक्षाके लिये दो दो निबंध भेजने चाहिये। तथा चतुर्थ (वेद-विशारद) और पंचम (वेद-पारंगत) परीक्षाके लिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



प्रत्येकके लिये तीन तीन निबंध भेजने चाहिये । इन निबंधोंको देखकर परीक्षक निश्चय कर सकते हैं कि, परीक्षार्थीका अध्ययन हुआ है या नहीं। और यह निश्चय करके परीक्षक प्रश्नपत्र उनके निरीक्षकके पास भेज देंगे। और निरीक्षक परीक्षाका प्रबंध करेंगे, तथा उत्तरपत्र स्वाध्याय मण्डलके पास भेज देंगे और परीक्षक उनकी परीक्षा करेंगे।

(२) षष्ठ परीक्षावेदाचार्यकी है। इसके लिये चारों वेदकी सभी उपलब्ध संहिताएं, सब ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ये ग्रन्थ मुख्यतः खोज करनेके लिये रखे हैं। इतिहास पुराण आदि अन्य ग्रंथ भी तुलना करनेके लिये लेने योग्य हैं। वेदाचार्यकी परीक्षा नहीं होगी, परंतु वैदिक वाङ्मयकी खोज करके किसी एक विषयपर बृहत् निबन्ध लिखना चाहिये। इस निबंधका कलेवर पैका टाइपसे छपे क्राउन अष्ट पत्र जैसे १०० पृष्ठोंसे कम नहीं होना चाहिये। प्रति पृष्ठपर २००० अक्षर छपते हैं, इस हिसाबसे १०० पृष्ठोंका लेख होना चाहिये। यदि किसी कारण एकही विषयपर इतना बडा निबंध न हो सकता हो, तो परीक्षार्थी दो या तीन विषय अपने लिये स्वा० मं० की अनुमतिसे पसंद कर सकते हैं।

(३) प्रारंभिक ५ परीक्षाओंके लिये मंत्रसंग्रहसेही जो विषय बन सकते हैं, उनमेंसे कुछ विषय निबंधके लिये पसंद करने चाहिये, जैसे—

(अ) देवताका स्वरूप, देवताके कार्य, देवताके गुण, देवताका प्रभाव,

(आ) देवताके शत्रु, शत्रुसे और भक्तसे देवताका बर्ताव,

(इ) देवताके शस्त्र, रथ, किले, नगर, युद्ध, सैन्य, अनुयायी, लडाईके प्रकार,

(ई) देवतासे मानवोंको लेने योग्य बोध, वैयक्तिक, समाजिक, राजकीय, व्यावहारिक,

(उ) मंत्रोंसे ज्ञात होनेवाली विद्याएँ, भोजन, खानपान, पेय पदार्थ, वस्त्र, आभूषण,

(ऊ) शरीरोंके अवयवोंका वर्णन, घरोंका वर्णन, सार्वजनिक स्थानोंका वर्णन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



( ऋ ) स्त्रियोंके संबंधमें जो भी विधान हों उनका संकलन,

( ऋ ) जिस समय ये मंत्र मानवोंके जीवनमें डाले जायँगे, उस समय मानव-समाज कैसा बनेगा और आज कैसा है ?

( ल ) देवता-वर्णनसे विद्या, कला, हुनर, बल, शौर्य वीर्य, संघटना आदिमेंसे किसकी सिद्धि होती है ?

इस तरह अनेक विषय जो अध्ययनके मंत्रोंमें होंगे, उनको निबंधके रूपमें लिखना चाहिये। इन निबंधोंको परीक्षक देखेंगे और निश्चित करेंगे कि परीक्षार्थीकी परीक्षाके लिये तैयारी हो गयी है या नहीं। इसलिये ये निबंध भेजना परीक्षार्थीके लिये अत्यंत आवश्यक है।

(४) वेदाचार्य परीक्षाके लिये निबंध तो एकही है, पर उसका कलेवर बहुत बडा है और खोजका क्षेत्रभी बहुतही विस्तीर्ण है। इस परीक्षार्थीको निबंधके विषयोंकी सूचना देनेके लिये कुछ विषय यहां हम लिखते हैं—

१. संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदोंकी तुलना,
२. वेद और भगवद्गीता ( तथा अन्य अनेक गीता ) ग्रंथोंकी तुलना,
३. वेद और स्मृतियोंकी तुलना,
४. वेद और महाभारत, रामायण तथा पुराणोंकी तुलना, पौराणिक कथाओंके वैदिक मूलकी खोज,
५. वेद और तंत्र ग्रंथोंकी तुलना,
६. वेद और आचार्योंके मतोंकी तुलना,
७. वेद और जेंद अवस्ता, बायबल, कुराण आदिकी तुलना,
८. वेद और बुद्ध तथा जैन आदि मतोंकी तुलना,
९. वेद और साधुसंतोंके वाङ्मयकी तुलना,
१०. वेद की साम्यवाद, समाजवाद, राष्ट्रवाद आदि आधुनिक विचारकोंके विचारोंके साथ तुलना,
११. वेदका राज्यशासन, समाजसंगठन, वैयक्तिक अभ्युदय, मुक्तिका अनुष्ठान इ०
१२. वेदका आदर्श राजा और राज्यशासक,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



१३. दस्यु, अनार्य, दास, असुर, वृत्र आदिकोंका स्वरूप-निर्णय,
१४. वेदमें विवाहकी कल्पना, बाल या प्रौढ, स्वयंवर या अन्य प्रकारके विवाह
१५. चार वर्ण तथा चार आश्रम और वेद,
१६. वैदिक यज्ञ, याग, क्रतु, सत्र इ०
१७. वेदकी ईश्वरविषयक कल्पना, अनेक देवतावादका निर्णय,
१८. वैदिक छन्द,
१९. वैदिक ऋषि, ऋषियोंके कुलोंकी खोज और संगति,
२०. वेदमंत्रोंमें भूमिके स्थान, नगर, पर्वत नदियाँ आदि निर्देश

इत्यादि विषयोंका निर्णय करनेयोग्य उत्तम परिश्रमपूर्वक यह निबंध लिखा जाना चाहिये। येही विषय हैं ऐसा नहीं है, प्रत्युत इस तरहके अन्य सैकडों विषयोंपर निबंध हो सकते हैं। जो निबंध सरल, सुबोध, सप्रमाण, सयुक्तिक और निश्चित वैदिक सिद्धान्तका प्रतिपादन करनेवाला होगा, उसीको आचार्य-उपाधिके लिये योग्य समझा जायगा। इसकी परीक्षा करनेवाले वेदके अनेक विद्वान् होंगे और सर्व संमतिसेही वेदाचार्यके लिये यह योग्य है वा नहीं इसका अन्तिम निर्णय होगा। परीक्षा-समितिका निर्णय अन्तिम होगा।

(५) सभी निबंध सुपाठ्य और कागजके एकही ओर लिखे तथा कागजके चारों ओर एक अंगुल या अधिक हाशिया छोडकर तथा दो पंक्तियोंमें एक पंक्तिका अन्तर रखकर लिखे होने चाहिये। दुष्पाठ्य निबंध स्वीकृत नहीं होंगे और न देखे जायँगे।

(६) निबंध सब प्रकारसे पसंद हुआ तो उसका प्रकाशन स्वयं स्वा० मंडल करेगा। पर निबंधके प्रकाशनके लिये वह बाध्य नहीं समझा जायगा।

(७) निबंधके वापसीके लिये आवश्यक डा० व्य० परीक्षार्थीसेही आना चाहिये। तबही वह वापस भेजा जायगा।

(८) वेदाचार्य परीक्षाके लिये परीक्षक समितिकी दक्षिणा केवल १०) रखी है।

(९) पहिली अन्य परीक्षाएँ देनेके विना भी विद्वान् पण्डित अपने खोज-पूर्ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



निबंध भेजकर इस वेदाचार्य परीक्षाके लिये उपस्थित हो सकते हैं। ऐसा करना हो तो उनको प्रथम एक सहस्र मंत्रोंका अर्थ, भावार्थ, टिप्पणी आदि लिखकर स्वा. मं. के पास भेजना होगा। इस लेखको देखकर उनको निबंध लिखनेकी आज्ञा मिलेगी। इसी तरह संस्कृतके और शास्त्रोंके तथा वेदोंके विद्वान् पण्डित पहिली परीक्षा न देते हुए भी आगेकी परीक्षाके लिये उपस्थित हो सकते हैं।

सूचना— पूर्व परीक्षा न देते हुए आगेकी परीक्षा देनी हो, तो नियत निबंधोंकी संख्यासे एक निबंध अधिक भेजना होगा। इस रतह विद्वान् पण्डित किसी भी परीक्षाके लिये उपस्थित हो सकता है। इस तरह उत्तर उत्तर परीक्षाके लिये उपस्थित होनेवाले विद्वान् प्रथम अपनी शास्त्र-परिचयकी योग्यता स्वा० मण्डलको लिखें और जिस परीक्षाके लिये बैठना हो उसकी संमति मांगे। विद्वानोंके लिये ऐसी सहूलियत अवश्य मिलेगी।

## उपाधि

परीक्षा उत्तीर्ण होनेपर उपाधि यहांसे भेजी जायगी।

इन नियमोंमें स्वा० मण्डलकी विद्वत्सभा तथा कार्यकारिणी समिति द्वारा योग्य समयमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन होगा और वही प्रकाशित या अप्रकाशित होनेपर भी परीक्षार्थीको स्वीकार करना होगा।

निवेदन-कर्ता

औंध ( जि. सातारा )
श्रावण शुद्ध पूर्णिमा
विक्रम संवत् २००३

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
अध्यक्ष, स्वाध्याय-मण्डल,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# परीक्षाके निरीक्षकके लिये

## सूचना

१. निरीक्षकके पास रजिष्ट्रीसे प्रश्नपत्र भेजे जायँगे ।

२. प्रश्नपत्रके साथ सूचना-पत्र होगा वैसी ही परीक्षाकी व्यवस्था करना निरीक्षकका कर्तव्य है ।

३. परीक्षा होतेही उत्तरपत्र रजिष्ट्रीसे स्वा० मं० के पास वापस आने चाहिये । डा० व्य० अधिक होगा, तो सूचना आनेपर यहांसे भेजा जायगा ।

४. परीक्षाके समय सब प्रश्नोंके उत्तर परीक्षार्थीको स्मरणसेही लिखने होंगे ।

५. परीक्षाका समय नियत है, उतनेही समयमें उत्तर-पत्रका लेखन होना चाहिये ।

६. उत्तर-पत्रके लिये कागद यहांसे भेजे जाते हैं, उनपरही उत्तर लिखने चाहिये ।

७. प्रश्नपत्र देनेका और उत्तरपत्र लेनेका समय नियत स्थानपर निरीक्षक दर्ज करे और उत्तर-पत्र रवाना करे ।

स्वाध्याय-मण्डल,
औंध ( सातारा )

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## प्रार्थना-पत्रका नमूना

श्री० मन्त्री, स्वाध्याय-मण्डल, औंध [ जि० सातारा ]

नमस्ते । निवेदन है कि, मैं ' ' की परीक्षा देना चाहता हूं। मेरा नियत मंत्रोंका अध्ययन हुआ है। मेरे निबंधभी स्वा०म० स्वीकृत हो चुके हैं। इस पत्रके साथ प्रश्नपत्रोंके लिये आज की डाकसे परीक्षक दक्षिणाका शुल्क भेजा है। कृपया प्रश्नपत्र भेज दीजिये।

परीक्षाके निरीक्षणका कार्य श्री० म० ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ने स्वीकार किया है। भवदीय

नाम ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ...

पता ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ...

ग्राम तथा पोष्ट ... ... ... ... ... ...

जिला ... ... ... ... ... ... ...

---

निरीक्षणके कार्यके लिये नियुक्त हुए सज्जनकी सम्मति ।

श्री० मन्त्री, स्वाध्याय-मण्डल, औंध [ जि० सातारा ]

नमस्ते । परीक्षाका निरीक्षण करना मैंने स्वीकार किया है। परीक्षाका निरीक्षण मैं आपके नियमानुसार करूंगा और परीक्षा समाप्त होतेही उत्तर-पत्र गुप्तताके साथ रजिष्ट्री डाकसे भेज दूंगा।

भवदीय

नाम ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ...

पता ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ...

पोष्ट ... ... ... ... ... ... ... ... ... ...

जिला ... ... ... ... ... ... ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi